

श्रीमद्भागवतम् स्कन्ध 4 अध्याय 15: राजा पृथु

21 September 2026

🙏 पाठ से पहले एक निवेदन

श्रीमद्भागवत महापुराण के ये अध्यायवार सार गीता प्रेस भागवत को मुख्य आधार मानकर तैयार किए गए हैं। ये भागवत के अध्ययन में सहायक हैं, मूल ग्रंथ का स्थान नहीं ले सकते।

अध्ययन का मुख्य और अनुशंसित मार्ग गीता प्रेस की भागवत पुस्तक से सीधा पाठ है। यात्रा में, घर से दूर, या जब पुस्तक पास न हो, तब निरंतर अध्ययन, पुनरावृत्ति और समझ के लिए इन सारों का सहारा लिया जा सकता है।



एक अत्याचारी के वंश के विनाश से, भगवान् एक रक्षक भेजते हैं: तेजोमय राजा पृथु, श्रीहरि का अंशावतार, ऋषियों तथा प्रजा के हर्ष के बीच सम्राट् के रूप में अभिषिक्त होते हैं, पृथ्वी की रक्षा पुनः स्थापित।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

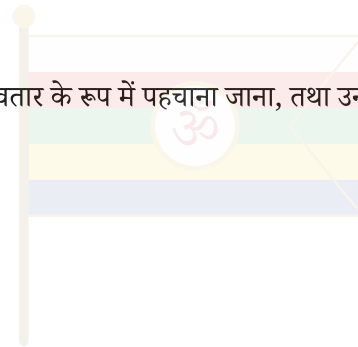
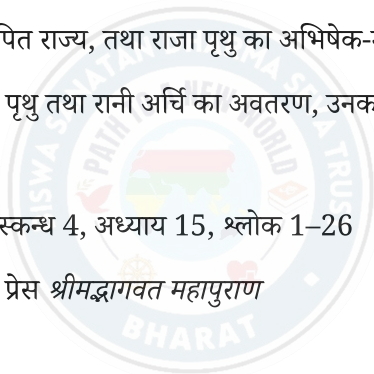
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

श्रीमद्भागवतम् विङ्गडम् में आपका स्वागत है — श्रीमद्भागवत महापुराण की पावन कथाओं और शिक्षाओं की एक भक्तिपूर्ण यात्रा। पिछले अध्याय में, अभिमानी राजा वेन अपनी ही निन्दा से नष्ट हुआ, और ऋषियों ने, एक योग्य शासक खोजते हुए, उसके निर्जीव शरीर का मन्थन किया — पहले एक श्याम प्राणी निकालते हुए जो उसका पाप हर ले गया। यह पंचदश अध्याय उस लम्बी रात्रि के बाद का प्रभात है। वेन की

भुजाओं के मन्थन से एक तेजोमय युगल उठता है: एक तेजस्वी पुरुष, ऋषियों द्वारा स्वयं भगवान् विष्णु का अंशावतार पहचाना गया, और एक सुन्दर स्त्री, लक्ष्मी देवी का अंश। ऋषि तथा प्रजा हर्षित होते हैं, यह जानते हुए कि पीड़ित संसार के लिए एक रक्षक आया है; पुरुष का नाम पृथु, स्त्री का अर्चि, जो उसकी रानी होगी। महान् समारोह से पृथु पृथ्वी के प्रथम सम्राट् के रूप में अभिषिक्त होते हैं, देवगण स्वयं उन पर दिव्य उपहार बरसाते हैं, और दिव्य वन्दीजन उनकी स्तुति गाने आगे आते हैं। यह राहत तथा हर्ष का अध्याय है — संसार की रक्षा के लिए भगवान् की अपनी शक्ति का अवतरण।

अध्याय की जानकारी

- शास्त्र: श्रीमद्भागवत महापुराण
- स्कन्ध: 4 (चतुर्थ स्कन्ध)
- अध्याय: 15 (पंचदश अध्याय)
- अध्याय का शीर्षक: राजा पृथु का अवतरण तथा अभिषेक
- मुख्य वक्ता: महर्षि मैत्रेय, विदुर को अपने उपदेश की निरन्तरता में (जिसमें ऋषियों के वचन उद्धृत हैं)
- मुख्य श्रोता: विदुर
- मुख्य स्थल: पुनर्स्थापित राज्य, तथा राजा पृथु का अभिषेक-मण्डप
- केन्द्रीय विषय: राजा पृथु तथा रानी अर्चि का अवतरण, उनका विष्णु के अवतार के रूप में पहचाना जाना, तथा उनका सम्राट् के रूप में अभिषेक
- मुख्य श्लोक-सीमा: स्कन्ध 4, अध्याय 15, श्लोक 1-26
- मूल संस्करण: गीता प्रेस श्रीमद्भागवत महापुराण



पिछले अध्याय का सन्दर्भ

अध्याय 14 ने राजा वेन के कुशासन तथा अन्त की, और उसके शरीर के मन्थन की कथा कही — उसकी जंघाओं से एक श्याम प्राणी जो उसका पाप हर ले गया, और फिर वह शुद्ध शरीर जिससे एक योग्य शासक आने वाला था। यह पंचदश अध्याय तब आरम्भ होता है जब ऋषि वेन की भुजाओं का मन्थन करते हैं, और वचनित अवतरण घटित होता है।

तेजोमय अवतरण

जैसे ही ब्राह्मणों ने विदेह, शुद्ध, निर्जीव शरीर की दोनों भुजाओं का मन्थन किया, उनसे एक तेजोमय युगल उठ खड़ा हुआ — एक तेजस्वी पुरुष तथा एक सुन्दर स्त्री।

मैत्रेय उवाच

अथ तस्य पुनर्विप्रैरपुत्रस्य महीपतेः ।

बाहुभ्यां मथ्यमानाभ्यां मिथुनं समपद्यत ॥ १ ॥

*maitreya uvāca atha tasya punar viprair aputrasya mahīpateḥ bāhubhyāṁ mathyamānābhyāṁ
mithunāṁ samapadyata*

अर्थ: मैत्रेय ने कहा: तब, जैसे ब्राह्मणों ने उस पुत्रहीन, दिवंगत राजा की दोनों भुजाओं का मन्थन किया, एक युगल — पुरुष तथा स्त्री — प्रकट हुआ। (स्कन्ध 4, अध्याय 15, श्लोक 1)



शुद्ध शरीर के मन्थन से एक तेजोमय युगल उठता है, और ऋषि उस तेजस्वी पुरुष में भगवान् विष्णु का अंशावतार पहचानते हैं, जो संसार की रक्षा के लिए आया है (श्लोक 1-4)।

ऋषियों ने, उस तेजस्वी पुरुष को देखकर, तुरन्त जान लिया कि वह क्या है। यह, उन्होंने घोषणा की, भगवान् विष्णु का अंशावतार है, संसार की रक्षा के लिए आया; और उसके साथ यह स्त्री लक्ष्मी देवी का अंश है, जो भगवान् से सदा अभिन्न है।

ऋषय ऊचुः

एष विष्णोर्भगवतः कला भुवनपालिनी ।

इयं च लक्ष्म्याः सम्भूतिः पुरुषस्यानपायिनी ॥ ३ ॥

*iṣaya ūcuḥ eṣa viṣṇor bhagavataḥ kalā bhuvana-pālīnī iyaṁ ca lakṣmyāḥ sambhūtiḥ
puruṣasyānapāyini*

अर्थ: ऋषियों ने कहा: यह पुरुष भगवान् विष्णु का अंशावतार है, संसार का रक्षक, और यह स्त्री लक्ष्मी का अंश है, जो भगवान् से सदा अभिन्न है। (स्कन्ध 4, अध्याय 15, श्लोक 3)

पृथु तथा अर्चि

ऋषियों ने उस तेजस्वी पुरुष का नाम पृथु रखा, यह भविष्यवाणी करते हुए कि वह राजाओं में अग्रगण्य तथा सम्राटों में प्रथम होगा। और उस सुन्दर स्त्री का — जिसके गुण उसके पहने आभूषणों को भी सुशोभित करते थे — उन्होंने नाम अर्चि रखा, यह घोषणा करते हुए कि वह पृथु की रानी तथा अभिन्न संगिनी बनेगी।

इयं च सुदती देवी गुणभूषणभूषणा ।

अर्चिर्नाम वरारोहा पृथुमेवावरुन्धती ॥ ५ ॥

iyam ca sudatī devī guṇa-bhūṣaṇa-bhūṣaṇā arcir nāma varārohā pṛthum evāvarundhatī

अर्थ: यह सुन्दर देवी, जिसके गुण उसके आभूषणों को भी सुशोभित करते हैं, अर्चि नाम की है; वह पृथु को ही अपने पति के रूप में स्वीकार करेगी। (स्कन्ध 4, अध्याय 15, श्लोक 5)



तेजोमय राजा पृथु, श्रीहरि का अवतार, सुन्दर अर्चि के साथ खड़े हैं, जो लक्ष्मी देवी का अंश है और जो उनकी रानी तथा अभिन्न संगिनी बनेगी (श्लोक 5-8)।

भगवान् ब्रह्मा अवतार की पुष्टि करते हैं

सम्पूर्ण सृष्टि हर्षित हुई: ब्राह्मणों तथा गन्धर्वों ने पृथु की स्तुति गाई, सिद्धों ने पुष्पवर्षा की, अप्सराएँ नृत्य करने लगीं, तथा शंख एवं दुन्दुभि गूँज उठे, जबकि ऋषि तथा पितर अपने-अपने लोकों से इस दृश्य को देखने उतर आए (श्लोक 7-8)। तब भगवान् ब्रह्मा, समस्त लोकों के गुरु, प्रमुख देवताओं के साथ यह देखने आए कि क्या प्रकट हुआ है।

ब्रह्मा जगद्गुरुर्देवैः सहासृत्य सुरेश्वरैः ।
वैन्यस्य दक्षिणे हस्ते दृष्ट्वा चिह्नं गदाभृतः ॥ ९ ॥
पादयोररविन्दं च तं वै मेने हरेः कलाम् ।
यस्याप्रतिहतं चक्रमंशः स परमेष्ठिनः ॥ १० ॥

*brahmā jagad-gurur devaiḥ sahāṣṭya sureśvaraiḥ vainyasya dakṣiṇe haste dṛṣṭvā cihnam
gadābhṛtaḥ*

*pādayor aravindaṁ ca taṁ vai mene hareḥ kalām yasyāpratihatam cakram aṁśaḥ sa
parameṣṭhinaḥ*

अर्थ: भगवान् ब्रह्मा, जगद्गुरु, समस्त देवताओं तथा उनके प्रमुखों सहित वहाँ पधारे; पृथु के दाहिने हाथ पर भगवान् विष्णु के चक्र का चिह्न, तथा उनके चरणतलों पर कमल का चिह्न देखकर, ब्रह्मा ने उन्हें परम भगवान् के अंश के रूप में पहचाना। (स्कन्ध 4, अध्याय 15, श्लोक 9-10)

यह छोटी सी परीक्षा एक बड़ी शिक्षा देती है। ब्रह्मा केवल ऋषियों के वचनों पर, अथवा असाधारण परिस्थितियों में प्रकट हुए तेजोमय युगल के कारण ही, पृथु की दिव्यता स्वीकार नहीं करते — वे उन विशिष्ट चिह्नों को देखते हैं जो शास्त्र भगवान् के सच्चे अवतार के लिए निर्धारित करते हैं: हथेली पर चक्र, चरण पर कमल। स्वयं ब्रह्मा भी, जो सम्पूर्ण सृष्टि के गुरु हैं, सभा द्वारा पृथु को अभिषिक्त करने से पहले इस आश्चर्यजनक घटना को इस कसौटी पर परखते हैं। यह जितनी पुष्टि है उतनी ही चेतावनी भी: उच्च जन्म, जनसमूह की प्रशंसा, अथवा शक्ति का प्रदर्शन, अपने आप में दिव्यता का प्रमाण नहीं है, और जो कोई शास्त्र-निर्दिष्ट चिह्नों के बिना स्वयं को अवतार घोषित करता है, वह मात्र इस दावे से पवित्र नहीं हो जाता (श्लोक 9-10)।

सम्राट् का अभिषेक

तब, महान् हर्ष तथा समारोह से, ऋषियों, ब्राह्मणों, तथा एकत्रित गणमान्य जनों ने पृथु को पृथ्वी के सम्राट् के रूप में अभिषिक्त किया, और संसार के समस्त लोकपाल उन्हें सम्मान देने आए। नदियाँ, समुद्र, पर्वत, तथा दिशाएँ अपनी भेंट लाईं; और स्वयं देवगण ने उन पर अपने दिव्य उपहार अर्पित किए। भगवान् ब्रह्मा ने उन्हें आध्यात्मिक ज्ञान का कवच दिया; सरस्वती ने एक सुन्दर हार; स्वयं भगवान् विष्णु ने सुदर्शन चक्र; और लक्ष्मी देवी ने अक्षय सम्पदा।

ब्रह्मा ब्रह्ममयं वर्म भारती हारमुत्तमम् ।
हरिः सुदर्शनं चक्रं तत्पत्न्यव्याहतां श्रियम् ॥ १६ ॥

*brahmā brahmamayaṁ varma bhāratī hāram uttamam hariḥ sudarśanaṁ cakram tat-patny
avyāhatām śriyam*

अर्थ: ब्रह्मा ने राजा पृथु को पवित्र ज्ञान का कवच दिया; सरस्वती ने एक सुन्दर हार; श्रीहरि ने सुदर्शन चक्र; और उनकी संगिनी लक्ष्मी ने अक्षय सम्पदा। (स्कन्ध 4, अध्याय 15, श्लोक 16)



पृथु के अभिषेक पर देवगण दिव्य उपहार अर्पित करते हैं — ब्रह्मा पवित्र ज्ञान का कवच, श्रीहरि सुदर्शन चक्र, तथा लक्ष्मी देवी अक्षय सम्पदा — सम्राट् को संसार की रक्षा के लिए सज्जित करते हुए (श्लोक 13-19)।

इस प्रकार स्वयं देवगण द्वारा सज्जित, तथा भगवान् की अपनी शक्ति के अंश से सम्पन्न, पृथु पृथ्वी के एक योग्य रक्षक के रूप में देदीप्यमान हुए, और उनकी प्रजा के, इतने समय से पीड़ित, हृदय आशा से भर उठे।

वन्दीजन उनकी स्तुति करने आते हैं

जैसे ही नव-अभिषिक्त सम्राट् अपनी महिमा में विराजमान हुए, दिव्य वन्दी तथा स्तुतिपाठक — सूत, मागध, तथा वन्दी — उनके गुणों की स्तुति करने आगे आए। उन्हें अपनी स्तुति गाने को उद्यत देखकर, महाबली पृथु, वेन के पुत्र, मुस्कुराए, और मेघ की गर्जना के समान गम्भीर वाणी में उनसे बोले।

स्तावकांस्तानभिप्रेत्य पृथुर्वैन्यः प्रतापवान् ।

मेघनिर्हादया वाचा प्रहसन्निदमब्रवीत् ॥ २१ ॥

stāvakāṁs tān abhipretya pṛthur vainyaḥ pratāpavān megha-nirhrādayā vācā prahasann idam abravīt

अर्थ: अपनी स्तुति करने आए वन्दीजनों को देखकर, महाबली पृथु, वेन के पुत्र, मुस्कुराए, और मेघ के समान गम्भीर वाणी में उनसे बोले। (स्कन्ध 4, अध्याय 15, श्लोक 21)



दिव्य वन्दीजन — सूत, मागध, तथा वन्दी — सिंहासनासीन पृथु के समक्ष उनकी महिमा गाने आते हैं, और सम्राट्, मुस्कराते हुए, मेघ के समान गम्भीर वाणी में उनसे बात करते हैं (श्लोक 21-26)।

पृथु का उत्तर स्वयं एक शिक्षा थी। उन्होंने वन्दीजनों से कहा कि जिन उदात्त गुणों का वे वर्णन कर रहे हैं वे अभी उनमें प्रकट नहीं हुए, और ऐसी स्तुति उसी के लिए रुकनी चाहिए जिसने उसे सचमुच अर्जित किया हो (श्लोक 22); सच्चे भक्त कभी भगवान् के गुण किसी ऐसे साधारण व्यक्ति को नहीं देते जिसके पास वे वास्तव में नहीं हैं (श्लोक 23)। जिन गुणों को स्वयं नहीं दिखाया, उनकी स्तुति अपने अनुयायियों से करवाना एक सूक्ष्म छल है, और जो इसे स्वीकार करता है वह, यह चाहे कितना ही मधुर क्यों न लगे, स्वयं का अपमान ही करता है (श्लोक 24)। जैसे सम्मानित व्यक्ति अन्यायपूर्ण निन्दा में सुख नहीं पाता, वैसे ही सच्चा महान् व्यक्ति अनर्जित स्तुति में भी सुख नहीं पाता (श्लोक 25); नव-अभिषिक्त पृथु ने कहा कि उन्होंने अभी ऐसा कुछ भी नहीं किया जो उत्सव के योग्य हो (श्लोक 26)। इस प्रकार पंचदश अध्याय उस स्तुति की देहरी पर समाप्त होता है, जिसे अगला अध्याय खोलेगा — वे वचन जिनमें वन्दीजन, निरुत्साहित हुए बिना, सम्राट् पृथु की महानता की भविष्यवाणी तथा स्तुति आगे भी करते रहते हैं।

इस अध्याय की प्रमुख शिक्षाएँ

1. भगवान् संसार की रक्षा के लिए अवतरित होते हैं। जब कुशासन ने पृथ्वी को विनाश तक ला दिया, भगवान् ने अपना अंश राजा पृथु के रूप में भेजा। परम पीड़ित संसार को नहीं त्यागते; वे, समय पर, उसे पुनर्स्थापित करने आते हैं (श्लोक 3)।
2. कृपा विनाश के उसी स्थान से उठ सकती है। पृथु दुष्ट वेन के मथे शरीर से अवतरित होते हैं। भगवान् अभिमान द्वारा छोड़े मलबे से भी अपना रक्षक प्रकट कर सकते हैं (श्लोक 1-3)।
3. दिव्य शक्ति दिव्य सेवा के लिए दी जाती है। पृथु को देवगण कवच, चक्र, तथा सम्पदा से सज्जित करते हैं — अपनी बड़ाई के लिए नहीं बल्कि संसार की रक्षा के लिए। बल का प्रत्येक उपहार दूसरों के भले के लिए एक धरोहर है (श्लोक 16)।
4. भगवान् तथा उनकी सम्पदा अभिन्न हैं। पृथु अर्चि के साथ अवतरित होते हैं, जो लक्ष्मी का अंश है। जहाँ भगवान् की शक्ति संसार की सेवा करने आती है, वहाँ उनकी कृपा तथा समृद्धि भी साथ आती है (श्लोक 3-5)।

5. दिव्यता की पुष्टि होती है, केवल दावा नहीं। सभा द्वारा पृथु को अवतार स्वीकार करने से पहले, भगवान् ब्रह्मा स्वयं उनके हाथ पर चक्र तथा चरणों पर कमल का चिह्न परखते हैं — यह प्रमाण शास्त्र से आता है, न कि प्रशंसा या रूप-सौन्दर्य से। असाधारण जन्म अथवा जनप्रशंसा अपने आप में दिव्यता का प्रमाण नहीं है (श्लोक 9-10)।

6. सच्ची महानता झूठी स्तुति को अस्वीकार करती है। नव-अभिषिक्त तथा दिव्य रूप से सज्जित, पृथु अपने वन्दीजनों को उन गुणों की स्तुति नहीं करने देते जो उन्होंने अभी दिखाए ही नहीं, और ऐसी अनुचित स्तुति स्वीकार करने वाले का ही अपमान बताते हैं। सच्ची श्रेष्ठता प्राप्त सम्मानों से नहीं बल्कि उस सच्चाई से नापी जाती है जो उन्हें ग्रहण करने के ढंग को नियंत्रित करती है (श्लोक 21-26)।

एक भक्तिपूर्ण चिन्तन

इस अध्याय के अपने से पूर्व अध्याय के अन्धकार का उत्तर देने के ढंग में एक गहरी सान्त्वना है। अध्याय 14 ने हमें एक बर्बाद राजा तथा एक भयभीत प्रजा के साथ छोड़ा; अध्याय 15 भगवान् की अपनी शक्ति के अवतरण से उत्तर देता है, वस्तुओं को ठीक करने के लिए। यही वह लय है जिस पर भागवत बार-बार लौटता है: कि चाहे कोई संसार या आत्मा कितनी ही दूर गिर गई हो, भगवान् मात्र देखते नहीं रहते। उचित ऋतु में वे आते हैं — कभी-कभी, यहाँ की भाँति, उसी विनाश से खींचे गए जिसे अभिमान ने रचा। और जब वे आते हैं, तो सज्जित तथा सुसंगत आते हैं: ज्ञान के कवच, रक्षा के चक्र, तथा अपने पार्श्व में सम्पदा की देवी के साथ, ताकि जो टूटा था वह सचमुच भरा जा सके, केवल जोड़ा न जाए। किन्तु हृदय को सबसे अधिक जो स्पर्श करता है वह वह स्वर है जिस पर अध्याय समाप्त होता है। पृथु, स्वयं भगवान् का अवतार, सम्राट् के रूप में अभिषिक्त तथा देवगण द्वारा सज्जित, उन गुणों की स्तुति स्वीकार करने से इनकार करते हैं जो उन्होंने अभी प्रदर्शित नहीं किए। कथा की सबसे महान् आकृति सबसे विनम्र भी है। यह एक शान्त स्मरण है कि सच्ची महानता कभी अपनी ही महिमा का व्यापार नहीं करती, और कि भगवान् का अपना अवतरण भी हमें, सबसे पहले, विनम्र होना सिखाता है।

एक दैनिक भक्ति-अभ्यास

आज, भली प्रकार ग्रहण करने का अभ्यास करें। हममें से प्रत्येक को उपहार दिए जाते हैं — योग्यताएँ, अवसर, दयाएँ — और, पृथु की भाँति, हम उन्हें या तो अपने लिए ट्रॉफी के रूप में या दूसरों की सेवा की धरोहर के रूप में ग्रहण कर सकते हैं। अपने पास के एक उपहार या लाभ को स्मरण करें, और उसे सचेत रूप से, “ॐ नमो भगवते वासुदेवाय” शब्दों के साथ, अपने सम्मान के लिए नहीं बल्कि अपने चारों ओर के लोगों के भले तथा भगवान् की सेवा के लिए समर्पित करें, जैसे पृथु ने देवगण के उपहार संसार की रक्षा के लिए ग्रहण किए। और जब स्तुति आपकी ओर आए, तो विनम्र सम्राट् से एक शिक्षा लें: उसे हल्के से ग्रहण करें, कोमलता से टालें, और उसे उन भगवान् की ओर मोड़ दें जिनसे प्रत्येक भला उपहार अवतरित होता है। विनम्रता से ग्रहण करने तथा सेवा में देने में, आप भगवान् के अपने अवतरण की भावना में चलते हैं।

उपसंहार

चतुर्थ स्कन्ध का पंचदश अध्याय वेन के कुशासन की रात्रि के बाद का प्रभात है। पतित राजा की मथी गई भुजाओं से एक तेजस्वी पुरुष तथा एक सुन्दर स्त्री प्रकट होते हैं, और भगवान् ब्रह्मा स्वयं, उनके हाथ-पैर पर चक्र तथा कमल के चिह्न परखकर, पुरुष को भगवान् विष्णु का अंशावतार तथा स्त्री को लक्ष्मी देवी का अंश घोषित करते हैं। पुरुष का नाम पृथु, राजाओं में अग्रगण्य, तथा स्त्री का अर्चि, जो उसकी रानी होगी। महान् समारोह से पृथु पृथ्वी के सम्राट् के रूप में अभिषिक्त होते हैं; संसार के लोकपाल उन्हें सम्मान देते हैं, और देवगण दिव्य उपहार अर्पित करते हैं — ब्रह्मा पवित्र ज्ञान का कवच, श्रीहरि सुदर्शन चक्र, तथा लक्ष्मी अक्षय सम्पदा — उन्हें संसार की रक्षा के लिए सज्जित करते

हुए। जैसे ही दिव्य वन्दीजन उनकी स्तुति करने आते हैं, महाबली सम्राट् उनकी स्तुति को अपरिपक्व चाटुकारिता कहकर अस्वीकार करते हैं, यह बल देते हुए कि स्तुति केवल वास्तव में प्रदर्शित गुणों के लिए ही उचित है। इस प्रकार अध्याय उस स्तुति की देहरी पर समाप्त होता है, यह दिखाते हुए कि भगवान् का अवतरण शास्त्रोक्त प्रमाण से सिद्ध होता है, न कि मात्र प्रशंसा से, और कि उनकी सच्ची महानता विनम्रता में आरम्भ होती है।

श्रीमद्भागवतम् का दिव्य ज्ञान हमारे हृदयों में शुद्ध भक्ति को जागृत करे।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

जय श्री माधव।

सन्दर्भ तथा आभार

- मूल संस्करण: गीता प्रेस, श्रीमद्भागवत महापुराण (अंग्रेज़ी, पूर्ण), चतुर्थ स्कन्ध, पंचदश अध्याय।
- शृंखला: श्रीमद्भागवतम् विज़्डम • बिस्व सनातन धर्म सेवा ट्रस्ट।
- पण्डित डॉ. श्री काशीनाथ मिश्र के आध्यात्मिक मार्गदर्शन तथा अनुशंसा के अनुसार प्रस्तुत।

यह लेखक के अपने शब्दों में एक मौलिक, निष्ठावान् पुनर्कथन है, जिसमें संक्षिप्त उद्धृत श्लोक देवनागरी तथा लिप्यन्तरण में दिखाए गए हैं और उनके अर्थ सारांश के रूप में दिए गए हैं। यह किसी एक प्रकाशक के निरन्तर अनुवाद या टीका का पुनरुत्पादन नहीं है। किसी भी प्रकाशक द्वारा किसी सम्बद्धता या समर्थन का दावा नहीं किया गया है।

॥ हरि ॐ तत्सत् ॥

जय श्री माधव

ऑनलाइन पढ़ें: kalkiabatara.org/hi/blog-srimad-bhagavatam-canto-4-chapter-15-descent-and-coronation-of-king-prithu-hi.html

श्रीमद्भागवतम् विज़्डम • कल्कि अवतार इंटरनेशनल • बिस्व सनातन धर्म सेवा ट्रस्ट